National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-01-2021, Accepted: 05-02-2021, Published: 24-03-2021
www.nationaljournals.com
Volume 6, Issue 2, 2021, Page No. 04-06

निर्मल वर्मा का चिन्तनः कहानी के संदर्भ में

Dr. Suman Rani Makkar
Associate professor, Department of Hindi, SW.P.N.K.S Government P.G College Dausa, Jaipur, Rajasthan, India

सारांश

रचना रचनाकार के लिए आत्मखोज का साधन होती है। लेखक जितना अपनी आत्मा में डूबता है, झांकता है, उतनी ही सच्चाई से वह अपने अंतर्मन के विचार व्यक्त करता है। अनुभव कहानी नहीं होते। अनुभवों के घटित हो चुकने के बाद एक और प्रक्रिया 'चिंतन' की प्रक्रिया शुरू होती है जहां से गुजरे बिना अच्छी कहानी का निर्माण नहीं हो सकता अतः कला चेतना की उपज है।

निर्मल वर्मा के चेतन स्तर पर स्मृतियाँ हावी रही हैं। निर्मल वर्मा का स्मृतियों को घटना स्तर तक लाना, घटना से कहानी का कर्म बनाना नाबोकोव के लेखन के सदृश्य ला खड़ा करता है। इसी तरह फ्रायडवाद, टॉलस्टॉय, वर्जिनिया वुल्फ़, हेडगर, मार्क्सवादी चिंतन, महर्षि रमन व देशी विदेशी संस्कृति का, साहित्य का धर्म व्यवस्थाओं का जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को वर्मा ने कहानियों के माध्यम से उकेरा है। निर्मल वर्मा का चिंतन पक्ष रचनाओं के लिए पार्शवभूमि का निर्माण करता रहा है।

मूल शब्द: चिंतन से कहानी लेखन की यात्रा: निर्मल वर्मा के संदर्भ में

प्रस्तावना

रचना रचनाकार के लिए आत्मखोज का साधन होती है। लेखक जितना अपनी आत्मा में डूबता है, झांकता है, उतनी ही संच्चाई से वह अपने अन्तर्मन के विचार व्यक्त करता है। अनुभव कहानी नहीं होते। अनुभवों के घटित हो चुकने के बाद एक ओर प्रक्रिया 'चिंतन' की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। जहाँ से गुज़रे बिना अच्छी कहानी का निर्माण नहीं हो सकता अतः कला चेतना की उपज है।

नयी कहानी का प्रादुर्भाव 1950–60 के आसपास हुआ। नयेकहानीकारों की रचनाओं में आम आदमी के जीवन में उभरे अर्न्तविरोध दृष्टिगत होते हैं। नयी कहानी के कहानीकारों में निर्मल वर्मा का नाम भी लिया जाता हैं । कुछ आलोचक तो इन की 'परिन्दे[1] कहानी से ही नयी कहानी का प्रारम्भ मानते है।

निर्मल वर्मा के चिन्तन में मानव मन को उद्वेलित करने वाली स्मृतियाँ रहीं हैं, उन्हीं स्मृतियों को वह कहानी रूप देकर अपने लेखन में अभिव्यक्त करते हैं। नाबोकॉव चिन्तन की तरह निर्मल वर्मा के चिन्तन पर भी स्मृतियाँ हावी रहीं हैं तभी वह नाबोकॉव की तरह लेखन को स्मृतियों पर आधारित मानते हैं। वह कहानियों में घटनाक्रम की अपेक्षा अतीत की यादों को मुख्य कथ्य बनाते है। उनका इस बारे में विचार है, स्मृति किसी घटना की स्मृति मिट जाती है, केवल शब्द रह जाते हैं, वह अलग हवा में झूलते रहते हैं। मुझे ऐसे शब्द इक्ट्ठा करने का शौक है। मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि इन शब्दों को दुहराने मात्र से वे घटनाएँ याद नहीं आएंगी, जिनको लेकर वे बने थे। वे अलग हैं, घटनाएँ अलग हैं, मैं कम से कम इन्हें अलग रखना चाहता हूँ, ताकि दोनों बिना एक–दूसरे को विकृत किए मेरे भीतर संग–संग जी सके, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कोई भी शब्द घटना के तात्कालिक सत्य, उसकी धडकन, उसके गर्द और पसीने को नहीं घेर सकता, जो बीत गया है। स्मृति अपने में एक खिड़की है– बाहर और भीतर को जोड़ती हुई। बाहर का विष्व बहुत दूर–दूर तक फैला है। वहां धूप है, हवा और आकाष में अथाह मौन है। हर खिड़की से बाहर झांकती हुई आंखो की परिधि में जितना मौन सिमट आता हैं, उतने ही घेरे में यह लय मुखरित हो जाती है, और मौन को समेटने की प्रक्रिया में फार्म का आविर्भाव होता है। यहां से कला की "हरकला की कहानी शुरू होती है मौन खत्म हो जाता है।'[2] इस परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा की 'हर बारिष में' रचना में ऐतिहासिक लम्हों से जुडे स्मृति चित्र हैं।[3]

निर्मल वर्मा 1959 में यूरोप प्रवास के लिए गये। उन्होंने तीन वर्ष प्राग में रहकर आधुनिक चेक साहित्य पर शोधकार्य किया। उन्होंने प्राग से आइसलैंड तक यूरोप के अनेक देषों की यात्रांए की।[4] इस प्रभाव के अन्तर्गत इन देशों में व्याप्त अलगाव, मोहभंग, संत्रास, मूल्यों के विघटन बदलते संबंधो की स्थितियों को निर्मल वर्मा ने भोगा। इन्हीं स्थितियों ने उनके चिंतन को लेखन के लिए प्रेरित किया जिसकी अभिव्यक्ति उनकी रचना 'बीच बहस में" मिलती है। पिता–पुत्र के बीच अलगाव कटाव को इस कहानी द्वारा अभिव्यक्त किया है। 'जलती झाडी',[6] 'लंदन की एक रात'[7] कहानियों में संत्रास को अभिव्यक्त किया है।

निर्मल वर्मा के चिन्तन पर पाश्चात्य परिवेश के साथ–साथ पाश्चात्य लेखकों का प्रभाव भी रहा। उन्होंने फ्रायडवादी दृष्टि के आधार पर प्रेम को स्वप्न माना है। स्वप्न जागृत अवस्था से भिन्न होता है। स्वप्न में पात्र प्रेम संबंधी इच्छाएँ ले जा सकते है, मगर अवधारणाएँ नहीं।[8] वर्मा के पात्र न तो प्रेम के द्वारा मिली मुक्ति में वास कर पाते हैं, न अपने अवधारणात्मक स्वरूप में लौट पाते हैं। वे दोनों ओर एक साथ भागना चाहते हैं। पात्र जितना ज्यादा एक दूसरे को चाहते है उतना ही एक दूसरे से छुटकारा पाने के लिए तड़पते हैं। प्रेम से छुटकारा पाने के लिए नया रास्ता 'मृत्यु' अपनाना चाहते है ''सुनो, आदमी ने बहुत धीरे से कहा, मैं मरना चाहता हूँ।[9]अतः पात्र न तो प्रेम की स्वप्न अवस्था में रह पाते हैं, नही अवधारणामूलक जागृत अवस्था में आते हैं। निर्मल वर्मा की माया दर्पण कहानी में तरन की स्थिति ऐसे ही है। तरन सोचती है 'जिन्दगी में एक बार जीना होता है और इसे उसके अलावा और कोई नही जियेगा। श्वह अपनी जिन्दगी स्वयं जियेगी, उसे अब यहाँ रहने के लिए किसी का मोह पीछे नहीं खीचेगा।[10]

पश्चिमी देशों की यौन उन्मुक्तता को निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों 'जलती झाड़ी', लवर्स में दिखाया है। इन कहानियों में बदलते

मानवी संबधं है। निर्मल वर्मा अनुसार सेक्स मनुष्य का सबसे निजी कर्म होते हुए भी केवल एकाकी कर्म नहीं है वह हमेशा हमें दूसरों के साथ जोड़ता है। फ्रायडवादी चिंतन क तरह वर्मा सेक्स पर अंकुश नहीं मानते। पति–पत्नी शादी उपरांत भी किसी अन्य से संबंध रख सकते है। प्रेमी प्रेमिका भी शारीरिक संबंध बना सकते है। इस चिन्तन की पुष्टि उन्होंने 'अन्तर ''अंधेरे' में कहानियों में की है।[11] फ्रायड के अनुसार शैशव और बाल्यकालीन अनुभव मनुष्य के चिंतन को प्रभावित करते रहते हैं।' निर्मल वर्मा ने इस मत से उपजे अपने चिंतन को 'सितम्बर की एक शाम' कहानी में व्यक्त किया है। इस कहानी का प्रमुख पात्र बाल्यकाल में अपने माता–पिता के अप्रिय व्यवहार के कारण घर से निकल जाता हैं। स्वच्छन्द मन संतापी गहनता के व्यामोह से ग्रस्त, वह उत्तरदायित्वहीन व्यक्ति बना जाता है। दिग्भ्रमित युवक न घर लौट पाता है, न स्वतंत्र जीवन जी पाता हैं। बहन द्वारा लौटने के लिए दिए गए पैसों से वह कुछ क्षणों के भोग में जीवन की सार्थकता पा लेता है।[12]

निर्मल वर्मा के चिंतन पर टॉलस्टाय की कहानी के वृत्त भी घूमते रहे। 'कण्वे और कालापानी' कहानी का अन्तिम दृश्य टॉलस्टाय की कहानी की याद दिलाता है, जिसमें तीन हरमिट्स थे। जब मिश्नरीज़ मास्को से उन्हे उपदेश देने आये तो बडी नम्रता से उन्होंने उपदेश सीखे और फिर धर्मप्रचारक जहाज में बैठकर मास्को जाने लगे तो ये हरिमट्स वो उपदेश भूल गये जो उन्हें सिखाए गये थे। वे धर्म प्रचारक के पीछ–पीछे दौड़े और कहने लगे, अरे भाई, हमें बताओ तो, कि अपने हमें क्या सिखाया था? हम तो भूल गए हैं। इस कहानी में भी अघोरी बाबा और मास्टर भागे–भागे हरमिट्स की तरह छोटे से आकर पूछते हैं, मनोकामना पूरी हुई।[13] अतः निर्मल वर्मा के चिंतन पर टॉलस्टाय का पूरा प्रभाव दिखलायी पड़ता है।

वुर्जीनिया वुल्फ़ की मिसेज उलोवे की तरह निर्मल वर्मा की कहानियों के पात्र आजीवन कुंवारे बने रहना बेहतर समझते है। क्योंकि उन्हें यह आषंका बनी रहती है कि प्रेमी या पति उस की चेतना पर हावी हो जायेंगें।[14]

जो व्यक्ति न कर्म में विश्वास करते है न दूसरे जन्म में विष्वास करते हैं उसे निर्मल वर्मा नास्तिक कहते हैं। ऐसा मानव मृत्यु के बाद शून्य को सत्य मानता है। ''हैडगर'' ने शून्य की अनुभूति दो प्रकार की मानी है। प्रथमतः जब वह अनुभव करता है कि सभी वस्तुएँ उससे दूर खिसकती जा रहीं है, द्वितीयतः जब वह स्वयं वस्तुओं से दूर भागने लगता है। निर्मल वर्मा ने भी हैडगर के इस चिंतन को सत्य मानकर कहानियों में शून्यता को महत्व दिया। 'माया का मर्म' कहानी में इन्होंने लिखा है कि नायक की स्मृतियाँ सूखे पत्तों–सी झरती जा रहीं हैं, यह उसके अतीत की शून्यता का परिणाम है।[15]

निर्मल वर्मा ने बौद्ध धर्म, औपनिषदिक व जीसस क्राइस्टर के आत्म व सत् संबंधी विचारों का अध्ययन किया। बौद्ध धर्म ने आत्मा को भ्रम मानते हुए कहा, हम अपनी वेदना से छुटकारा तब पा सकते है जब अपनी 'आत्मा' को भी भ्रम मान चले और उसके परे चले जाए। निर्मल वर्मा ने इस मान्यता का खण्डन किया। गौतम बौद्ध बारह वर्ष समाधि में रहकर कोई सत्य, सत्य का दर्षन उपलब्ध कर पाए तो अवष्य ही वह दर्षन अपने आप में संपूर्ण रहा होगा। यदि ऐसा था तो उन्हें सारनाथ में चार आदमियों के सम्मुख अपना संदेष देने की क्यों जरूरत महसूस हुई? क्या कहीं उनकी आत्मोपलब्धि संपूर्ण होने पर भी आत्मशंकित, अप्रमाणित थी?[16] बुद्ध की तरह जीसस क्राइस्ट से पूछा गया 'सत्य' क्या है तो वह कोई उत्तर न देकर चुप रहें और कहा सत्य के लिए संघर्ष करते रहो। जीसस क्राइस्ट का मौन बौद्ध के मौन की स्मरण दिलाता है। निर्मल वर्मा के चिंतन अनुसार शब्द और मौन का यह अन्तर्गुम्फित संबंध जिस रचना को जन्म देता है –उसी में रचना का सत्य निहित है।[17] इस संबंध में विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा – मनुष्य का मनुष्य रूप में जीना एक सतत् तनाव में जीने की प्रक्रिया है। उसे इस तनावमयी स्थिति से बाहर निकलने के लिए अहं की प्रताड़ना से मुक्ति पाकर उसे 'शेष' से अपने को जोड़ना होगा जहां दूसरा व्यक्ति शामिल है।[18]

निर्मल वर्मा का यह चिंतन उनकी कहानियों के पात्रों द्वारा दिखलाई पड़ता है। पात्र अपने से ही मुक्त होने के लिए बच्चों के पास आते हैं। वह बच्चों के पास अपना अनगढ़ स्वरूप वापिस करने आते है। 'माया का मर्म' कहानी में लता माथुर बच्ची के सामने आती है।[19] बीच बहस में कहानी में पिता बच्चों की तरह अस्पताल से घर जाने के लिए ज़िद करते है। अंधेरे में,[21] पहाड,[22] कहानी में बच्चे व्यस्क है। निर्मल वर्मा के चिन्तन को मार्क्सवाद भी उद्वेलित करता रहा। मार्क्सवादी विचारधानुसार वर्मा जी ने पूंजीवाद का विरोध 'एक दिन का मेहमान' कहानी में किया है, जिसमें गरीबों को टी.वी पर दिखाने की चर्चा है। मार्क्स ने पूंजीवादी समाज में आदमी के अकेलेपन की चर्चा की है। वर्मा जी ने लंदन की एक रात, 'परिन्दे, –'डेढ़ इंच उपर' धूप का एक टुकडा, 'माया–दर्पण' कहानियों में अकेलेपन की चर्चा की है।

'आधुनिकता' का आन्दोलन बीसवीं शती के आरम्भ में विक्टोरियन विष्वासों को तोड़ने में सफल रहा था। आधुनिकता का आवरण लेखकों का अपने को सुरक्षित घोसलों में समेटने का एक सुविधाजनक साधन बन चुका है। निर्मल वर्मा भी आधुनकिता के लेवल को चिपकाने मे पीछे नहीं हटे, उन्होंने कहा कि वही भारतीय अपने क्षेत्रों मे महत्वपूर्ण उपलब्धि कर सकते हैं जो एक दकियानूसी–विरोधों को सहकर भारतीयता का अतिक्रमण करने का साहस दिखा सकते हैं। जैसे प्राचीन काल में राजा–राममोहन राय ने समाज सुधार किया तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भाषा संबंधी प्रयोगों के साथ–साथ दकियानूसी विरोधों का साहस के साथ सामना किया।वर्मा के अनुसार यही साहसपूर्ण संघर्ष करना सही अर्थो में आधुनिकता है। वर्मा ने कथा साहित्य को आधुनिक ढंग से अभिव्यक्त किया जिससे उनकी रचनाओं का पैटर्न दूसरे लेखकों से बिल्कुल अलग हो गया है।[23]

निर्मल वर्मा ने महर्षि रमण के चिन्तन का अध्ययन किया है। जिस का प्रभाव वर्मा के लेखन में मुखरित भी हुआ है। निर्मल वर्मा की कहानी, 'कण्वे और कालीपानी' में सहजी बाबा महर्षि रमण की तरह है। महर्षि रमण भी 16 वर्ष की अवस्था में लुप्त हो गये थे। उन की माँ उन्हें पागलों की तरह ढूंढने निकली थी। इस कहानी में भी सहजी बाबा को उनके भाई ढूंढने निकले है।[24] निर्मल वर्मा के जीवन पर देशी–विदेशी संस्कृति का,साहित्य का, लेखकों का तथा धर्मव्यवस्था का प्रभाव रहा है। जीवन पर पड़ी छाप अनुभव बनकर चिंतन स्तर पर कहानियों में दिखलाई पड़ती है। वर्मा मार्क्सवादी दृष्टिकोण के साथ–साथ रूमाणी व्यक्तित्व को कहानियों में वर्णित करते रहें है। कुछ वर्षो उपरांत वह मार्क्सवाद से हटकर गांधीवादी हो गए। कुछ लेखकों ने इसी कारण इनके विरूद्ध काफी लिखा है कि वर्मा वामपंथी रूझान से हटकर विरोधी षिविर में चले गये। समयानुसार बदलते दर्षन से प्रभावित होकर बदलती चिंतन दृष्टि से, विरोधी षिविर में जाने पर भी वर्मा के साहित्य का वैशिष्ट्य कम नहीं हुआ। बदलते चिंतन की अभिव्यक्ति लेखन में करते रहने से नवीनता का परिचय भी इनके साहित्य में मिलता है।

निष्कर्षत

निर्मलवर्मा ने दैनिक जीवन के क्रियाकलापों से ग्रहण किए गए अनुभवों की सर्जना लेखन में की है। उनके अनुभवों की यह विशिष्टता रही है कि वह साहित्य सृजन में अभिव्यक्ति उपरांत उन स्थितियों, घटनाओं , वास्तविकटाओं से दूर हो जाते है जिन्हे अपने लेखन का माध्यम बनाते है। वह इन अनुभवों को स्मृति के द्वार मे बन्द कर लेते हैं। स्थितियाँ इस द्वार को खोलती हैं। द्वार खलुने पर अनुभव लेखक के 'चेतन–प्रवाह (चिंतन) में प्रवेश कर मूर्त रूप में अभिव्यक्त होकर सृजना धरातल पर उतरते है।

अतः कहानीकार का चिंतन पक्ष उनकी रचनाओं के लिए पार्श्व भूमि का निर्माण करता है।स्मृतियों में जीवित और अस्तित्वान अतीत निर्मल वर्मा के लेखन के लिए सबसे बड़ा सम्बल रहा है। यही विशिष्टता उनके लेखन को चरम परकाश्टा परले जाती है।

सन्दर्भ सूची

1. वर्मा निर्मल, परिन्दे, नई दिल्ली : पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, प्रा.लि. 1960
2. वर्मा निर्मल, हर बारिश में, नई दिल्लीः राधाकृष्णन प्रकाषन, 1970 पृ. 103
3. 'हर बारिश में' एक बीच की कड़ी है – जहाँ न भोग का सुख है न समाधान का निश्चय– केवल एक अनुभव की कड़ी, जिसपर खास ऐतिहासिक लम्हों के स्मृति चित्र टंगे है। वर्मा निर्मल, हर बारिश में, पृ.8
4. सन्धु मधु, कहानीकार निर्मलवर्मा, दिल्ली :दिनमान प्रकाशन, 1981 पृ.10
5. वर्मा. निर्मल, बीच बहस में, हापुड, संभावना प्रकाशन, 1981
6. वर्मा, निर्मल, जलती झाडी, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन 1965
7. वर्मा निर्मल, मेरी प्रिय कहाँनियाँ, लंदन की एक रात, दिल्ली :राजपाल एण्ड सन्ज़, 1989
8. उदयन वाजपेयी, होना एक लेखक का (लेख), अशोक वाजपेयी निर्मल वर्मा, पृ. 90
9. वर्मा निर्मल, कण्वे और कालापानी, आदमी और लडकी पृ. 144
10. वर्मा निर्मल, परिन्दे, मायादर्पण पृ. 41
11. सन्धु मधु, कहानीकार निर्मल वर्मा, पृ. 71
12. वर्मा निर्मल, परिन्दे, सितम्बर की एक शाम, पृ 114–122
13. गांधी रामचन्द्र, कन्वे और कालापानी : एक सहज पाठ (लेख) अषोक वाजपेयी निर्मल वर्मा पृ. 157
14. वहीं पृ. 167
15. सन्धु मधु, कहानीकार निर्मल वर्मा, पृ. 113
16. वर्मा निर्मल, कला का जोखिम, पृ. 49
17. वर्मा निर्मल, साहित्यिक कृतिका सत्य (लेख) आलोचना पृ. 10
18. निर्मल वर्मा से अशोक वाजपेयी ध्रुव शुक्ल और उदयन वाजपेयी की बातचीत अशोक वाजपेयी, निर्मल वर्मा, पृ. 26–27
19. वर्मा निर्मल, परिन्दे माया का मर्म, पृ. 93
20. वर्मा निर्मल, बीच बहस में, बीच बहस में पृ. 79
21. वर्मा निर्मल, मेरी प्रिय कहानियाँ, अंधेरे में पृ. 61
22. वर्मा निर्मल, जलती झाड़ी, पहाड़ पृ. 67
23. चौहान उशा, नयी कहानी के कहानीकारों की आलोचनात्मक दृष्टि, पृ. 161–162
24. गांधी रामचन्द्र, कन्वे और कालापानी, एक सहज पाठ (लेख) अशोक वाजपेयी, निर्मल वर्मा, पृ. 119